

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 21, यीशु, मसीहा, ईश्वर, भाग 2

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 21 है, यीशु, मसीहा, ईश्वर, भाग 2।

न्यू टेस्टामेंट के बाकी हिस्सों पर आगे बढ़ने से पहले, मैं उन बातों में कुछ सुधार करना चाहता हूँ जो मैंने पहले कही थीं और जो पाठ मुझे नहीं मिल पाए थे।

उनमें से एक यीशु को परमेश्वर के पूर्व-अस्तित्व वाले पुत्र के रूप में चर्चा करना था। मैथ्यू अध्याय 23 और श्लोक 34 वे अंश थे जिन्हें मैं पढ़ना चाहता था, जहाँ यीशु कहते हैं, इसलिए, मैं तुम्हारे लिए भविष्यद्वक्ताओं और संतों और शिक्षकों को भेज रहा हूँ। उनमें से कुछ को तुम मार डालोगे और सूली पर चढ़ा दोगे, दूसरों को तुम अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे और शहर-शहर उनका पीछा करोगे।

तो फिर, यीशु को किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जा रहा है जो चीजों के व्यापक संदर्भ में संदेशवाहक भेजता है, ऐसा लगता है कि यीशु बाहर है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु के काम करने के लिए आने की भाषा से ऐसा लग सकता है कि यीशु स्वर्गीय क्षेत्र से सांसारिक क्षेत्र से बाहर है। तो अब यीशु ही वह है जो भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों और संतों को भेजता है जिन्हें फरीसी अस्वीकार करते हुए चित्रित करते हैं। तो यह मत्ती 23 और श्लोक 34 था।

फिर, दूसरा, जब यीशु ने मुकदमे में शपथ लेकर मसीहा होने का दावा किया, तो वह पिलातुस के सामने नहीं, बल्कि पुजारी कैफा के सामने था। और हम पाते हैं कि मत्ती 26:63 और 64 में, मेरे पास 23 और 24 थे, लेकिन 63 और 64, महायाजक ने उससे कहा, यीशु से, मैं तुझे जीवित परमेश्वर की शपथ दिलाता हूँ, हमें बता कि क्या तू मसीहा, परमेश्वर का पुत्र है। और यीशु ने कहा कि तूने ऐसा कहा है।

दिलचस्प बात यह है कि वह अध्याय सात और श्लोक 14 में दानिय्येल का हवाला देते हैं। इसलिए, शपथ के तहत, यीशु ने मसीहा होने का दावा किया। लेकिन इसके अलावा, यीशु का खुद के लिए प्रसिद्ध पसंदीदा पदनाम मनुष्य का पुत्र है, शायद इसलिए कि वह गलतफहमी से बच सकता था और इसे अपनी खुद की समझ से भर सकता था कि वह कौन था।

तो, मैं अब नए नियम के बाकी हिस्सों की ओर बढ़ना चाहता हूँ। और हम फिर से कुछ मुट्टी भर, कई नए नियम के पाठों का नमूना लेंगे, पॉल के कुछ पत्रों से शुरू करते हुए, जहाँ हम मुट्टी भर पाठों, दो या तीन प्रमुख पाठों को देखेंगे, लेकिन फिर कुछ अन्य चीजों को देखेंगे, पॉल के संदर्भ, जो यीशु के बारे में बताते हैं कि वह कौन थे, जो सुसमाचारों में यीशु के स्वयं के चित्रण के अनुरूप हैं। लेकिन मैं जिस जगह से शुरू करना चाहता हूँ वह है कुलुस्सियों का अध्याय 1, और श्लोक 15-20, जो संभवतः यीशु मसीह के व्यक्तित्व का सबसे उत्कृष्ट, काव्यात्मक वर्णन है, जो एक

बहुत ही उच्च क्राइस्टोलॉजी को भी प्रकट करता है, अर्थात् यीशु मसीह होने का दावा करते हैं, या पॉल यीशु को केवल एक असाधारण मानव के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वर्गीय, उच्च व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो कि किसी से कम नहीं है, स्वयं ईश्वर से कम नहीं है।

इसलिए, अध्याय 1, श्लोक 15-20 में, पुत्र, अर्थात् यीशु मसीह, अदृश्य परमेश्वर की छवि है, जो सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है। क्योंकि उसी में सारी चीज़ें सृजी गई हैं, स्वर्ग की चीज़ें और पृथ्वी की चीज़ें, दृश्यमान और अदृश्य, चाहे सिंहासन हों या शक्तियाँ या शासक या अधिकारी, सारी चीज़ें उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। वह सब चीज़ों से पहले है, और उसी में सारी चीज़ें एक साथ टिकी हुई हैं।

फिर यह आगे बढ़ता है और कहता है; वह शरीर, चर्च का मुखिया है, वह शुरुआत है और मृतकों में से ज्येष्ठ है, ताकि हर चीज में उसका वर्चस्व हो। और मैं यहीं रुक जाऊंगा। लेकिन इस पाठ में, पॉल शायद बुद्धि की अवधारणाओं का भी उपयोग कर रहा है, या शायद कर रहा है।

अर्थात्, बुद्धि को सृष्टि के निर्माता के रूप में भी देखा गया। नीतिवचनों में और पुराने नियम के बाहर यहूदी साहित्य में भी बुद्धि को ईश्वर की छवि के रूप में देखा गया। यीशु की बुद्धि को भी ज्येष्ठ पुत्र के रूप में देखा गया।

इसलिए, यह संभव है कि पॉल यह भी सुझाव दे रहा हो कि यीशु, परमेश्वर की बुद्धि, अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में, पुत्र में पूरी हो गई है। लेकिन हम पहले ही परमेश्वर की छवि की धारणा पर चर्चा कर चुके हैं, शायद न केवल आदमिक विचारों का सुझाव दे रहे हैं बल्कि अब यीशु मसीह ही वह है जो परमेश्वर को प्रकट करता है, स्वयं परमेश्वर का रहस्योद्घाटन। यीशु सृष्टि का कर्ता है।

यीशु ज्येष्ठ भी हैं। जैसा कि हमने पहले कहा, ज्येष्ठ की शब्दावली यीशु को एक सृजित प्राणी के रूप में नहीं दर्शाती है, जो कि इन आयतों के बाकी हिस्सों के साथ विरोधाभासी होगा, जहाँ यीशु ईश्वर की सृष्टि, हर चीज़ की रचना का एजेंट है। हर चीज़ का अस्तित्व यीशु मसीह के माध्यम से ईश्वर की रचनात्मक गतिविधि के कारण है, जो यीशु को सृजित प्राणी होने से अलग करता है।

यीशु तब भी वही है, जो पद 18 से शुरू होता है। यीशु भी वही है, जो अपने पुनरुत्थान के माध्यम से, एक नई सृष्टि का उद्घाटन करता है। इसलिए, कुलुस्सियों अध्याय 1 और पद 15-20 एक बहुत ही उच्च मसीह-विद्या को प्रकट करते हैं। अर्थात्, यीशु की पहचान स्वयं परमेश्वर से की जाती है, जिसके द्वारा परमेश्वर सृष्टि करता है, जो स्वयं परमेश्वर की छवि और प्रकटीकरण है, जो ज्येष्ठ है।

अर्थात्, ज्येष्ठ का अर्थ है कि वह अत्यधिक श्रेष्ठ है; उसे प्रथम सृष्टि पर सर्वोच्चता और श्रेष्ठता का दर्जा प्राप्त है, और वह वही है जो अब एक नई सृष्टि का उद्घाटन करता है। इसलिए, कुलुस्सियों 1 पौलुस और आरंभिक चर्च की मसीह कौन था, इस बारे में समझ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ प्रदर्शित करता है। फिलिप्पियों 2:6-11, एक और पाठ जो कुलुस्सियों 1:15-20 से मिलता-

जुलता है, इस बात पर बहुत बहस है कि क्या ये भजन हैं या क्या पौलुस ने इन्हें लिखा है, और मुझे इसमें जाने में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं है।

मुझे इस बात में ज़्यादा दिलचस्पी है कि वे यीशु के बारे में क्या व्यक्त करते हैं और पौलुस और आरंभिक चर्च मसीह के बारे में क्या सोचते थे। कुलुस्सियों 2:6-11, मैं पढ़ूँगा, "...जो परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने लाभ की वस्तु न समझा, वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया कि दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य के समान बन गया, और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" अब, मैं यहीं रुकता हूँ। पद 6 की शुरुआत यीशु के होने के वर्णन से होती है; कुछ अनुवाद कह सकते हैं, परमेश्वर के स्वरूप में।

2011 NIV जो मैंने अभी पढ़ा है, उसका अनुवाद है, "...जो परमेश्वर के स्वभाव में है।" इसलिए, रूप का विचार केवल यह नहीं है कि यीशु परमेश्वर की तरह दिखता है या परमेश्वर जैसा दिखता है, हालाँकि वह हो नहीं सकता है, बल्कि यह कि यीशु अपने अस्तित्व में स्वयं परमेश्वर है, जैसा कि भजन के बाकी हिस्से में, मुझे लगता है, प्रदर्शित होता है, विशेष रूप से एक खंड में जिसे हम बस थोड़ी देर में देखेंगे। और जैसा कि छंद 6 से पता चलता है, उसने परमेश्वर के साथ समानता को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करने के लिए नहीं माना। इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर के साथ उसकी समानता, यह तथ्य कि यह विशेष रूप से यह संबोधित नहीं कर रहा है कि वह सार या अस्तित्व में समान है, लेकिन निश्चित रूप से महिमा और स्थिति में, यीशु परमेश्वर के बराबर है, लेकिन स्पष्ट रूप से, छंद का पहला भाग, परमेश्वर के रूप में होने से पता चलता है कि अपने अस्तित्व में वह परमेश्वर के बराबर है, इसे अपने लाभ के लिए उपयोग नहीं करना चुनता है।

मुझे लगता है कि इसका यही सही अनुवाद है। कुछ अनुवादों में कहा गया है कि उसने ईश्वर के साथ समानता को ऐसी चीज़ नहीं माना जिसे हासिल किया जा सके, जैसे कि यह ऐसी चीज़ है जो उसके पास नहीं थी और उसने इसे हासिल न करने का फैसला किया, या ऐसा कुछ जो उसके पास था जिसे उसने छोड़ दिया और खो दिया। इसके बजाय, मुझे लगता है कि विचार यह है कि उसने इसका इस्तेमाल अपने फायदे के लिए नहीं किया बल्कि महिमा के उस पद को छोड़ने का फैसला किया।

जैसा कि बाकी पाठ में कहा गया है, जिस तरह से उसने समानता पर विचार नहीं किया वह था खुद को कुछ भी न बनाकर एक सेवक का स्वभाव अपनाना, मानव सदृश होना। फिर से ध्यान दें, श्लोक 7 में, NIV कहता है कि उसने खुद को कुछ भी नहीं बनाया। यह आपके द्वारा देखे गए कुछ अनुवादों से अलग लग सकता है।

इसका शाब्दिक अर्थ है कि उसने खुद को खाली कर लिया। लेकिन अगर हम पूछना शुरू करें, तो उसने खुद को क्या खाली किया? क्या उसने अपनी कुछ विशेषताओं से छुटकारा पाया? संभवतः, यह वाक्यांश, उसने खुद को खाली कर लिया, खुद को कोई प्रतिष्ठा नहीं देने या खुद को कुछ भी नहीं बनाने के लिए प्रतीकात्मक था। अर्थात्, यद्यपि वह ईश्वर के रूप में था और ईश्वर के अस्तित्व में भागीदार था, उसने ईश्वर की उच्च स्थिति और महिमा को साझा किया और स्वर्गीय

वैभव में ईश्वर के बराबर था। उसने उससे चिपके रहने या अपने लाभ के लिए उसका उपयोग न करने का निर्णय लिया, बल्कि इसके ठीक विपरीत।

वह अब एक सेवक का स्वभाव और रूप धारण करके और मानव सदृश बनकर और मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर अपमानजनक मृत्यु तक, खुद को दीन बनाकर खुद को कुछ भी नहीं बनाने का फैसला करता है। इसलिए, श्लोक 7 और 8 में बताया गया है कि इसका क्या मतलब है कि उसने खुद को खाली कर दिया। उसने कुछ खोया नहीं, बल्कि इसके बजाय, उसने कुछ ग्रहण किया।

यह एक सेवक का स्वभाव है, एक इंसान बनना, खुद को घृणित, अपमानजनक क्रूस पर मौत की हद तक दीन बनाना। यह निश्चित रूप से इस बात का प्रदर्शन है कि किस हद तक उसने अपनी स्थिति, परमेश्वर के साथ अपनी समानता, और परमेश्वर के स्वभाव में अपने होने को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने के रूप में नहीं माना। लेकिन जो महत्वपूर्ण है वह श्लोक 10 और 11 है।

पद 10 और 11, पद 9 से शुरू करते हुए कहते हैं। इसलिए, परमेश्वर ने उसे तब ऊंचा किया जब उसने खुद को दीन किया, यहाँ तक कि मृत्यु तक। फिर परमेश्वर ने उसे सर्वोच्च स्थान पर ऊंचा किया और उसे वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर, स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना झुके, और हर जीभ स्वीकार करे या स्वीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु है। दिलचस्प बात यह है कि पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में अक्सर परमेश्वर को संदर्भित करने के लिए, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए एक शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।

अब, मैं आपका ध्यान आयत 10 और 11 में इस भाषा की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जो पुराने नियम से सीधे आती है। यदि आप यशायाह अध्याय 45, यशायाह अध्याय 45 आयत 20 और उसके बाद, यशायाह 45 आयत 20 और उसके बाद की ओर मुड़ें। और दिलचस्प बात यह है कि यह संदर्भ में है, और यह इस्राएल की मूर्तिपूजा और मूर्तिपूजा से बचने के संदर्भ में है।

यशायाह के अध्याय 45 की आयत 15 और 16 में लिखा है, "सचमुच तुम एक ऐसे ईश्वर हो जो खुद को इस्राएल के ईश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में छिपाए हुए हो। सभी मूर्ति बनाने वाले शर्मिंदा और अपमानित होंगे। वे हमेशा के लिए अपमानित हो जाएँगे।"

अब, मैं यशायाह 45 की आयत 20 से शुरू करता हूँ। हे राष्ट्रों से भागे हुए लोगों, अज्ञानियों और लकड़ी की मूर्तियाँ लेकर घूमने वालों, जो परमेश्वर से, अनेक देवताओं से, जो बचा नहीं सकते, प्रार्थना करते हो, इकट्ठे होकर आओ। तो फिर से, मूर्तिपूजा के संदर्भ में।

जो होने वाला है, उसे घोषित करो, उसे प्रस्तुत करो, और वे आपस में परामर्श करें। किसने बहुत पहले इसकी भविष्यवाणी की थी? किसने इसे सुदूर अतीत से घोषित किया था? क्या यह मैं नहीं था, प्रभु ने कहा? तो जो एक बात है, भगवान को मूर्तियों से अलग करती है, वह है वर्तमान में घोषित करने और लाने की उनकी क्षमता जो उन्होंने अतीत में घोषित की थी। श्लोक 22: हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहनेवालों, मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ, क्योंकि मैं ही ईश्वर हूँ, और कोई दूसरा नहीं है।

मूर्तियाँ किसी से मुकाबला नहीं कर सकतीं। परमेश्वर के अलावा किसी और की घोषणा करना, उसकी स्तुति करना और उसकी पूजा करना, परमेश्वर के अलावा किसी और की ओर मुड़ना मूर्तिपूजा है। श्लोक 23: मैंने अपनी ही शपथ खाई है, मेरे मुँह ने पूरी सच्चाई से एक वचन कहा है जो पलटा नहीं जाएगा।

मेरे सामने हर घुटना झुकेगा; मेरे द्वारा हर जीभ अंगीकार करेगी। वे मेरे विषय में कहेंगे, केवल प्रभु में ही हमारा उद्धार और सामर्थ्य है। और अब, फिलिप्पियों 2 में, यह यीशु मसीह के नाम में है कि उद्धार पाया जाता है।

यीशु मसीह को स्वीकार करने से ही मुक्ति मिलती है। और यह यीशु मसीह ही है जिसके आगे स्वर्ग और पृथ्वी पर हर घुटना झुकेगा और हर जीभ स्वीकार करेगी कि वह यशायाह 54 की पूर्ति में प्रभु है। इसलिए, आपके पास इससे अधिक स्पष्ट कोई पाठ नहीं हो सकता, क्योंकि यह एक बहुत ही उच्च, उच्च क्राइस्टोलॉजी है जहाँ यीशु मसीह को स्वयं ईश्वर और सर्वोच्च प्रभु के रूप में चित्रित किया गया है जिसके आगे हर घुटना झुकेगा और हर जीभ स्वीकार करेगी।

और यह कि केवल यीशु मसीह में ही उद्धार पाया जा सकता है, यीशु प्रभु के रूप में। और इस बारे में फिर से चौंकाने वाली बात यशायाह 54 में है, जो मूर्तिपूजा के संदर्भ में है। किसी और की ओर देखना, कहीं और देखना, किसी और की पूजा करना मूर्तिपूजा है।

अब, यह भाषा, हालांकि, यीशु मसीह पर लागू होती है, लेकिन परमेश्वर की अद्वितीयता पर सवाल नहीं उठाती क्योंकि वह ब्रह्मांड का प्रभु है, वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो आराधना के योग्य है और वह एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसमें उद्धार पाया जाता है। अब, यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर लागू होता है। पौलुस की पत्रियों में हम कई बार पाते हैं कि यीशु मसीह को प्रभु के रूप में नामित किया गया है।

और फिर से, हम उन सभी पर नज़र नहीं डालेंगे, लेकिन सिर्फ़ कुछ उदाहरणों के तौर पर, हमने फिलिप्पियों अध्याय 2 की आयत 10 और 11 को पहले ही देख लिया है। यह यीशु के नाम पर है कि हर घुटना झुकेगा, और हर जीभ यीशु मसीह को प्रभु के रूप में स्वीकार करेगी और स्वीकार करेगी। फिर से, इसका महत्व यह है कि यीशु को एक ऐसे शब्द के रूप में पहचाना जाता है जिसका इस्तेमाल पुराने नियम में परमेश्वर के लिए किया जाता है।

और अब यीशु प्रभु हैं। और खास तौर पर फिलिप्पियों 2 में, यशायाह अध्याय 45 के एक उद्धरण के संदर्भ में, एक ऐसे पाठ का उद्धरण जो सभी अन्य दावेदारों, सभी अन्य मूर्तियों के मुकाबले परमेश्वर को एकमात्र प्रभु के रूप में संदर्भित करता है। रोमियों अध्याय 10 और श्लोक 13 एक और उदाहरण है।

रोमियों अध्याय 10 और श्लोक 13. मैं वापस जाऊँगा और 12 पढ़ूँगा, क्योंकि यहूदी और गैरयहूदी के बीच कोई अंतर नहीं है।

वही प्रभु सबका प्रभु है और जो कोई उसे पुकारता है, उसे भरपूर आशीर्वाद देता है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम पुकारता है, वह उद्धार पाएगा। दिलचस्प बात यह है कि पुराने नियम से एक और उद्धारण जिसे अब पौलुस लेता है, वह यीशु मसीह के व्यक्तित्व को संदर्भित करता है।

इसलिए, यीशु को भगवान के रूप में पुराने नियम के ग्रंथों से उद्धारणों के माध्यम से पहचाना जाता है जो भगवान का उल्लेख करते हैं। और इसलिए, पॉल के पत्रों में प्रभु की उपाधि को संभवतः ईश्वरत्व और संप्रभुता की उपाधि के रूप में लिया जाना चाहिए, और उन्हें पुराने नियम के प्रभु के रूप में पहचाना जाना चाहिए। वह एकमात्र प्रभु है जो हमारी पूजा के योग्य है।

सारी सृष्टि पर प्रभुता रखने वाला प्रभु। सुसमाचारों में एक और विषय पर वापस जाएँ तो, पौलुस भी यशायाह 52 और 53 से सेवक की भाषा को उठाता हुआ प्रतीत होता है, जहाँ मसीह वह है जो अपने लोगों के पापों के लिए मरता है। वह अपने लोगों के लिए एक विकल्प है।

शास्त्र के अनुसार, वह मर जाता है। 1 कुरिन्थियों के अध्याय 15 में यह एक दिलचस्प वाक्यांश है, जो बिलकुल शुरुआत में है, जब पॉल कहता है, मैं तुम्हें वही बताता हूँ जो मुझे बताया गया था कि मसीह हमारे पापों के लिए मरा और दफनाया गया और फिर से जी उठा। शायद यह यशायाह 52 और 53, पीड़ित सेवक पाठ, यीशु मसीह में पूर्णता पाने के लिए एक संकेत है। लेकिन निश्चित रूप से, पॉल में बार-बार उल्लेख है कि मसीह अपने लोगों के पापों के लिए मर जाता है, कि वह अपने लोगों के लिए एक विकल्प है, कि उसका बलिदान लोगों के लिए एक विकल्प है, शायद यशायाह 52 और 53 में विशेष रूप से और यशायाह से सेवक अंशों का संकेत देता है।

यह तथ्य कि यीशु मसीह या मसीहा है, संभवतः कम से कम कुछ हद तक दाऊद की वाचा की भाषा को दर्शाता है जो अब मसीह पर लागू होती है। हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर के राज्य के विषय और वाचा के विषय के संदर्भ में, यीशु दाऊद से किए गए पुराने नियम के वादों की पूर्ति में मसीहा है। हालाँकि यह कहना मुश्किल है कि क्या वे सभी मसीहा हैं, लेकिन यह असंभव है कि जब पौलुस यीशु को मसीह के रूप में संदर्भित करता है, तो वह हमेशा इसे एक नाम के रूप में उपयोग करता है।

जैसा कि हम कह सकते हैं, डेविड मैथ्यूसन, तो जीसस क्राइस्ट, यह उनके नाम का ही एक हिस्सा है। इसके बजाय, यह हो सकता है, और मुझे लगता है कि कोई यह तर्क दे सकता है कि कम से कम कुछ उदाहरणों में, यदि उनमें से बहुत से नहीं, जब जीसस को मसीह कहा जाता है, तो यह एक उपाधि है। मसीहा उपाधि यीशु मसीह को पूर्णता में मसीहा के रूप में दर्शाती है, पुराने नियम में दाऊद के वादों की पूर्ति में अभिषिक्त व्यक्ति, जैसा कि हम सुसमाचार में यीशु को चित्रित करते हुए पाते हैं।

तो फिर, मसीह सिर्फ एक नाम नहीं हो सकता, बल्कि कई जगहों पर, यह मसीहा के रूप में यीशु का एक शीर्षक हो सकता है। पॉल के पत्रों से बाहर जाकर, हम और भी बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन निश्चित रूप से पॉल के पास यीशु के बारे में एक बहुत ही उच्च क्राइस्टोलॉजी है, जो ईश्वर को प्रकट करता है, यीशु जो ईश्वर है, ईश्वर की छवि है, सृष्टि में ईश्वर का प्रतिनिधि है, सृष्टि में ज्येष्ठ है, जो ईश्वर का उद्धार लाता है, जिसे हर कोई स्वीकार करेगा कि यीशु प्रभु है, जो पूजा के

योग्य है, जो लोगों के पापों से निपटने के लिए आता है, लोगों के पापों के लिए उनके स्थानापन्न के रूप में मरने के लिए, शास्त्र के अनुसार मरने के लिए, मसीहा, वह मसीह जो दाऊद के वादों को पूरा करने के लिए आता है। मुझे लगता है कि ये सभी, पॉल की समझ के लिए हिमशैल के सिरे मात्र हैं कि यीशु मसीह कौन है, एक बार फिर अपने लोगों के पास आने और अपना उद्धार लाने के लिए ईश्वर के इरादे की पूर्ति के रूप में।

जब कोई पौलुस के पत्रों से बाहर निकलता है, तो अगला स्वाभाविक ठहराव बिंदु संभवतः इब्रानियों की पुस्तक है। हमने अन्य विषयों के संबंध में कई बार इस पुस्तक का उल्लेख किया है, लेकिन इब्रानियों अध्याय 1 और पद 1 से 3 में लेखक की समझ को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि मसीह कौन है, इसलिए इब्रानियों 1 पद 1 से 3, अतीत में, परमेश्वर ने कई बार और विभिन्न तरीकों से भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से हमारे पूर्वजों से बात की, लेकिन इन अंतिम दिनों में, पूर्णता के समय में, उसने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है, जिसे उसने सभी चीजों का वारिस नियुक्त किया है, और जिसके द्वारा उसने ब्रह्मांड भी बनाया है। इसलिए, कुलुस्सियों अध्याय 1 और यूहन्ना अध्याय 1 के बीच संबंधों पर ध्यान दें, जहाँ यीशु अब परमेश्वर का अंतिम प्रकाशन है। परमेश्वर ने अब अपने पुत्र के माध्यम से बात की है, जो सभी चीजों का वारिस है और जिसके द्वारा सभी चीजें बनाई गई हैं।

वह फिर से यूहन्ना 1 और कुलुस्सियों 1:15-20 में पौलुस द्वारा कही गई बातों पर विचार कर रहा था। पुत्र परमेश्वर की महिमा की चमक है, उसके अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व है। इसलिए, पुत्र परमेश्वर की महिमा को दर्शाता है, पुत्र परमेश्वर के चरित्र, उसके अस्तित्व को प्रकट करता है, फिर से, मेरे विचार से, यीशु के ईश्वरत्व का एक बहुत ही मजबूत कथन है। लेकिन फिर से, हम केवल यीशु के ईश्वरत्व को साबित करने के लिए पाठ का प्रमाण देने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, बल्कि बाइबल, धर्मशास्त्र के अनुसार यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि मसीह लगातार कैसे मौजूद है।

तो एक बार फिर, अपने लोगों के लिए परमेश्वर का खुद का रहस्योद्घाटन यीशु मसीह के व्यक्तित्व में चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है। परमेश्वर के वचन को बोलने, परमेश्वर को प्रकट करने, परमेश्वर का अंतिम रहस्योद्घाटन और अपने लोगों के लिए भाषण देने के लिए उससे बेहतर कौन हो सकता है जो उसके अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व करता है, जो परमेश्वर की महिमा का प्रतिबिंब है, परमेश्वर की महिमा और उसके चरित्र की चमक है। फिर से, महिमा का इस्तेमाल अक्सर पुराने नियम में परमेश्वर की अपने लोगों के साथ उपस्थिति, उसके खुद के प्रकटीकरण के संदर्भ में किया जाता है।

पुत्र परमेश्वर की महिमा की चमक है, उसके अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व है, जो अपने शक्तिशाली वचन से सभी चीजों को बनाए रखता है। इसलिए, हम पहले ही फिलिप्पियों 2 और कुलुस्सियों 1, साथ ही सुसमाचार में यूहन्ना 1 से जुड़े इन सभी विषयों को देख चुके हैं। इसलिए, परमेश्वर के विषय, यीशु अपने लोगों के लिए परमेश्वर का अंतिम वचन है, उसका स्वयं का रहस्योद्घाटन, वह जो परमेश्वर की महिमा को दर्शाता है, वह जो सार रूप में परमेश्वर के अस्तित्व में साझा करता है, यह प्रकट करने में सक्षम है कि परमेश्वर कौन है, और साथ ही सृष्टि के साथ उसका संबंध भी।

यीशु मसीह के माध्यम से ही परमेश्वर ने सभी चीजों को अस्तित्व में लाया है। इसलिए, लेखक अपने पाठकों को यह बताता है कि वह उन्हें सुसमाचार के बाकी हिस्सों में, इब्रानियों की पुस्तक के बाकी हिस्सों में मसीह की अपनी प्रस्तुति को कैसे समझना चाहता है। अध्याय 1 और पद 5 में, हम पाते हैं कि दिलचस्प बात यह है कि सभी स्वर्गदूतों के ऊपर, यीशु मसीह अध्याय 1, पद 5 में एक अद्वितीय स्थान रखता है। वह परमेश्वर का अद्वितीय पुत्र है।

क्योंकि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों में से किससे कभी कहा, तू मेरा पुत्र है, आज मैं तेरा पिता बन गया। या फिर, मैं उसका पिता बनूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। हमने पहले भजन 2 और 2 शमूएल 7, दाऊदी वाचा सूत्र से उद्धरण देखे थे।

इसलिए, परमेश्वर के अद्वितीय पुत्र के रूप में, यीशु अब दाऊद से किए गए वादों को पूरा करता है। और हम उन्हें आगे नहीं बढ़ाएंगे; हम उन्हें परमेश्वर के राज्य और दाऊद की वाचा के संबंध में विकसित करते हैं। लेकिन इन ग्रंथों से परे, इब्रानियों के बाकी हिस्सों की संपूर्णता में, यीशु मसीह ही वह है जो पुरानी वाचा के तहत परमेश्वर के सभी पिछले प्रकाशनों को पूरा करता है।

हम इसे पद 1 में पहले ही देख चुके हैं। अतीत में, परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से कई बार विभिन्न तरीकों से भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बात की थी। इसलिए, यह उस तरीके का सारांश है जिस तरह से परमेश्वर ने पुरानी वाचा के तहत खुद को प्रकट किया था। लेकिन अब, अंतिम दिनों में, पूर्णता के समय की अवधि में, परमेश्वर ने अब अपने पुत्र के माध्यम से बात की है।

फिर, इब्रानियों की पुस्तक के बाकी हिस्सों में, लेखक लगातार यीशु मसीह की तुलना पुराने नियम के तहत विभिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं से करेगा। इसलिए, अध्याय 1 में यीशु की तुलना स्वर्गदूतों से की गई है, उनकी तुलना मूसा से की गई है, उनकी तुलना यहोशू से की गई है, वे यहोशू की तुलना में बेहतर विश्राम लाते हैं, उनकी तुलना पुराने नियम के पुजारी से की गई है, और उन्हें महान पाया गया है क्योंकि वे मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार हैं। हम पाते हैं कि यीशु मसीह की तुलना पुराने नियम के बलिदानों से की गई है, जिस वाचा की यीशु ने शुरुआत की, जिस नई वाचा का उन्होंने उद्घाटन किया, वह पुरानी वाचा से बड़ी है, वे एक बड़े मंदिर में सेवा करते हैं, वे विश्वास का एक बड़ा उदाहरण भी हैं।

इब्रानियों 11 में विश्वास के नायक जितने महान हैं, अध्याय 12 में, अपनी आँखें यीशु पर टिकाएँ, जो हमारे विश्वास के रचयिता और पूर्णकर्ता हैं। इब्रानियों 11 के उदाहरण जितने महान हैं, यीशु विश्वास का उससे भी कहीं बेहतर उदाहरण है। इसलिए, पुराने नियम के तहत परमेश्वर के सभी पिछले प्रकाशन अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व द्वारा ग्रहण कर लिए गए हैं, जिसमें परमेश्वर यीशु मसीह के माध्यम से बोल रहा है।

और यीशु मसीह उद्धार के परमेश्वर के सभी उद्देश्यों को पूरा करता है ताकि वे अब पुराने नियम की बलिदान प्रणाली से जुड़े या पाए न जाएँ। लेकिन अब, जो कुछ उन्होंने इंगित किया था वह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपने चरम पर पहुँच गया है। इसलिए, एक बार फिर, मुझे लगता है कि इब्रानियों के पास काफी उच्च और उत्कृष्ट क्राइस्टोलॉजी है।

यीशु को परमेश्वर के रहस्योद्घाटन के चरमोत्कर्ष के रूप में, परमेश्वर की मुक्तिदायी गतिविधियों के चरमोत्कर्ष के रूप में प्रस्तुत करके, परमेश्वर के उद्धार के सभी उद्देश्य, जो पुराने नियम की बलिदान प्रणाली और पुरोहिती और मंदिर में व्यक्त किए गए थे, अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पाए जाते हैं। एक और पड़ाव जेम्स की पुस्तक हो सकती है। और मैं बस कुछ बातों का बहुत संक्षेप में उल्लेख करना चाहता हूँ।

दिलचस्प बात यह है कि याकूब के अध्याय 1 और पद 1 तथा अध्याय 2 पद 1 में याकूब परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का सेवक है। और अध्याय 2 और पद 1 पर ध्यान दें। मेरे भाइयों और बहनों, हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने वालों। इसलिए, ऐसा लगता है कि यीशु पुराने नियम में परमेश्वर की महिमा से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, निर्गमन में पुराने नियम से परमेश्वर की महिमा, अब याकूब की पुस्तक में मसीह के व्यक्तित्व के साथ जुड़ जाती है। लेकिन इसके अलावा, याकूब के अध्याय 5 और श्लोक 7 और उसके बाद। इसलिए, भाइयों और बहनों, प्रभु के आने तक धैर्य रखें।

देखो किसान कैसे अपनी ज़मीन से कीमती फसल आने का इंतज़ार करता है, और धैर्यपूर्वक पतझड़ और बसंत की बारिश का इंतज़ार करता है। तुम भी धैर्य रखो और दृढ़ रहो क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है। भाइयों और बहनों, एक दूसरे के खिलाफ़ बड़बड़ाओ मत, नहीं तो तुम पर दोष लगाया जाएगा।

जज दरवाजे पर खड़ा है। दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 5 की पहली छह आयतें धनवानों की निंदा करती हैं और आयत 4 को दर्शाती हैं क्योंकि धनवान लोग अपनी दौलत जमा कर रहे हैं और वे गरीबों पर अत्याचार कर रहे हैं। आयत 4 कहती है, आपने अपने खेतों में काम करने वाले मजदूरों को जो मजदूरी नहीं दी, वह आपके खिलाफ़ चिल्ला रही है।

कटाई करने वालों की चीखें सर्वशक्तिमान प्रभु के कानों तक पहुँच चुकी हैं। संभवतः सर्वशक्तिमान प्रभु के इन सभी संदर्भों को, जो प्रभु के आगमन के बारे में हैं, अध्याय 1, श्लोक 1 और 2.1 के प्रकाश में समझा जाना चाहिए, जहाँ प्रभु यीशु मसीह हैं। तो अब हम अध्याय 5 में यीशु मसीह को एक युगांतकारी न्यायाधीश के रूप में आते हुए देखते हैं ताकि वे आकर परमेश्वर के अपने भविष्य के न्याय को अंजाम दें।

फिर से, यह एक चौंकाने वाला कथन है, मुझे लगता है, पुराने नियम के प्रकाश में, जहाँ यह परमेश्वर है जो न्याय करने आएगा, जहाँ हम भविष्य में परमेश्वर के आने और उसके द्वारा न्याय निष्पादित किए जाने की अपेक्षा करते हैं। अब हम यीशु मसीह, प्रभु, महिमा के प्रभु को भविष्य में ईश्वर के स्वयं के न्याय को निष्पादित करने के लिए युगांतिक न्यायाधीश के रूप में आते हुए पाते हैं। इसलिए, नए नियम के इस भाग में जैसा कि हमने सुसमाचारों में देखा, हम पाते हैं कि यीशु मसीह ने यीशु के बारे में यह साबित करने या यीशु के बारे में यह साबित करने या यीशु के बारे में यह साबित करने के लिए केवल पाठ के अंशों का उपयोग करने से कहीं अधिक है।

इसके बजाय, हम पाते हैं कि यीशु मसीह लगातार पुराने नियम में परमेश्वर को जिम्मेदार ठहराए गए सभी कार्यों को पूरा कर रहा है। पुराने नियम में परमेश्वर अब जो करता है वह पापों की क्षमा

प्रदान करना, अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति, नई वाचा लाना, पवित्र आत्मा देना, भविष्य में न्याय करने के लिए आना, और एक युगांतिक न्यायाधीश के रूप में न्याय करना है। हम पाते हैं कि वे सभी भूमिकाएँ अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से पूरी और निभाई गई हैं।

सृष्टि, हम पाते हैं कि अब सृष्टि यीशु मसीह के माध्यम से पूरी होती है। वह सृष्टि में परमेश्वर का प्रतिनिधि है, और इसलिए हमने यह भी देखा है कि नए नियम के लेखक यीशु के बारे में परमेश्वर की छवि, परमेश्वर के रूप में, परमेश्वर के बराबर, परमेश्वर की महिमा और अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व, परमेश्वर की महिमा की चमक के रूप में बात करते हैं, फिर से यह शब्दावली अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में निवास करने वाले परमेश्वर पर लागू होती है। तो, ऐसा लगता है कि नए नियम के लेखक हमें यह दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि परमेश्वर कौन था, और पुराने नियम में वादा किए अनुसार परमेश्वर को क्या पूरा करना था, जो अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रकट हुआ है।

परमेश्वर ने अब यीशु मसीह के उद्देश्य में स्वयं को अंतिम रूप से प्रकट किया है। उद्धार लाने के लिए परमेश्वर के सभी उद्देश्य अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरे हो रहे हैं। मुझे लगता है कि सुसमाचार और पॉलिन साहित्य और इसके अलावा साहित्य का नमूना जिसे हमने नए नियम में देखा है, इसकी गवाही देने में सुसंगत हैं।

मैं जो करना चाहता हूँ वह है प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को देखना, और ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, मुझे लगता है कि प्रकाशितवाक्य में नए नियम में सबसे समृद्ध मसीह विज्ञान है, और दुर्भाग्य से, जब भी हम प्रकाशितवाक्य के बारे में सोचते हैं तो हम युगांतशास्त्र और अंत समय के बारे में सोचते हैं और हम इसका उपयोग मूल रूप से इतिहास के अंतिम समापन में क्या होने वाला है, इसकी समझ में योगदान देने के लिए करते हैं और वास्तव में प्रकाशितवाक्य ऐसा करता है। निश्चित रूप से, विशेष रूप से अध्याय 19 से 21 को पढ़ने पर, कोई भी इस बात से इनकार नहीं करेगा कि प्रकाशितवाक्य इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना के समापन, पूरे इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना की अंतिम पूर्ति और पूरे इतिहास में अपने लोगों के साथ उसके छुटकारे के व्यवहार के चरमोत्कर्ष को दर्ज करता है। हालाँकि, अगर हम प्रकाशितवाक्य को युगांतशास्त्र और अंत समय की चीज़ों तक ही सीमित रखते हैं, तो मुझे लगता है कि हम इस तथ्य को भूल जाते हैं कि प्रकाशितवाक्य लगभग हर दूसरे महत्वपूर्ण बाइबिल धर्मशास्त्र विषय, विशेष रूप से मसीह विज्ञान में योगदान देता है।

जैसा कि मैंने कहा, प्रकाशितवाक्य में संपूर्ण नए नियम में सबसे समृद्ध मसीहविज्ञान शामिल है। यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पहले अध्याय में शुरू होता है, और यूहन्ना द्वारा महिमावान यीशु मसीह का वर्णन दिया गया है। अध्याय 1 और श्लोक 12 से 16 को देखें। यूहन्ना कहता है कि मैं उस आवाज़ को देखने के लिए मुड़ा जो मुझसे बात कर रही थी, जिसे वह श्लोक 10 में एक तेज़ तुरही जैसी आवाज़ के रूप में वर्णित करता है। मैं उस आवाज़ को देखने के लिए मुड़ा, और जब मैं मुड़ा, तो मैंने सात सुनहरे दीवट देखे और दीवटों के बीच एक मनुष्य के पुत्र जैसा कोई व्यक्ति था जो अपने पैरों तक पहुँचने वाले वस्त्र पहने हुए था और उसकी छाती के चारों ओर एक

सुनहरा पट्टा था, उसके सिर के बाल ऊन की तरह सफेद थे जो बर्फ की तरह सफेद थे और उसकी आँखें धधकती आग की तरह थीं।

उसके पैर भट्टी में चमकते हुए पीतल के समान थे। उसकी आवाज़ बहते पानी की आवाज़ जैसी थी। अपने दाहिने हाथ में उसने सात तारे पकड़े हुए थे और उसके मुँह से एक तेज़ दोधारी तलवार निकल रही थी। उसका चेहरा अपनी पूरी चमक में चमकते सूरज जैसा था।

जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा मानो मैं मरा हुआ हूँ, और उसने अपना हाथ मेरे ऊपर रखा और कहा कि डरो मत। मैं पहला और आखिरी हूँ; मैं जीवित हूँ। मैं मरा हुआ था, और अब मैं जीवित हूँ। मैं यहीं रुकता हूँ, लेकिन मैं यूहन्ना द्वारा देखे गए मसीह के इस वर्णन के बारे में कुछ बातें नोटिस करना चाहता था। सबसे पहले, यीशु को एक बार फिर दानियेल अध्याय 7 में मनुष्य के पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और जो बात इसे स्पष्ट करती है वह है उसके वस्त्र और बालों का शेष विवरण और उसका सिर ऊन की तरह सफेद है, बर्फ की तरह सफेद लेकिन जो बात दिलचस्प है वह है मनुष्य के पुत्र के रूप में उसके वर्णन के बाद का शेष भाग यूहन्ना दानियेल के अध्याय 7 से लेता है, लेकिन वह सिंहासन पर बैठे हुए प्राचीन काल के व्यक्ति की भाषा का उपयोग करता है। यदि आप दानियेल 7 में वापस जाते हैं, तो यह प्राचीन काल का व्यक्ति है जिसके सिर पर ऊन की तरह सफेद बाल हैं, इसलिए यूहन्ना उन दोनों को जोड़ता है। यीशु केवल मनुष्य का स्वर्गीय पुत्र नहीं है। वह प्राचीन काल का भी है, और अब यूहन्ना ने दानियेल 7 में दोनों आकृतियों को मिलाकर उसका वर्णन किया है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि यीशु वास्तव में कौन है।

उन्होंने यह भी बताया कि उनके पैर भट्टी में चमकते हुए पीतल के समान थे, उनकी आवाज़ बहते पानी की आवाज़ की तरह थी, इसलिए यह स्पष्ट रूप से एक उच्च कोटि का व्यक्ति था, लेकिन उनका चेहरा चमक रहा था, सूरज की तरह, अपनी पूरी चमक में चमक रहा था। आप इस व्यक्ति की यह तस्वीर पाते हैं जो प्राचीन काल के परमेश्वर, मनुष्य के पुत्र के रूप में परमेश्वर की महिमा को दर्शाता है। उसके मुँह से एक तलवार भी निकल रही है, जो फिर से न्याय का संकेत देती है।

यह वही है जो लोगों पर परमेश्वर के अपने न्याय को लागू करता है। तो, इस दर्शन की शुरुआत में, एक बार फिर, यूहन्ना ने आपको लगभग यह बता दिया है कि आपको यीशु मसीह और उसकी बाकी किताब को कैसे समझना है। यह मनुष्य का महान पुत्र है।

यह वही है जो अति प्राचीन है। यह वही है जो परमेश्वर की महिमा की चमक से चमकता है। यह वही है जो पृथ्वी पर परमेश्वर का न्याय कार्यान्वित करता है।

फिर भी, यह सब यीशु मसीह के दर्शन में समाहित है जिसे यूहन्ना देखता है। और यह स्पष्ट करने के लिए कि यह यीशु मसीह है, पद 18 में, वह कहता है, मैं जीवित हूँ, मैं मर गया था, लेकिन देखो, मैं अब हमेशा के लिए जीवित हूँ, और मेरे पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं। इसलिए, बिलकुल शुरुआत में, हम यीशु मसीह का उसकी पूरी महिमा में एक ऊंचा चित्र पाते हैं।

अगला पड़ाव प्रकाशितवाक्य के अध्याय 4 और 5 होंगे। अध्याय 4, और वास्तव में, दोनों एक साथ चलते हैं। अध्याय 4 परमेश्वर के दर्शन से शुरू होता है। हालाँकि उसका वर्णन नहीं किया गया है, केवल उसके सिंहासन का वर्णन किया गया है।

परमेश्वर का एक दर्शन जो अपने सिंहासन पर बैठा है, वह प्रभुता सम्पन्न शासक, न्यायधीश और सभी चीजों का रचयिता है। वह सभी सृष्टि से ऊपर खड़ा है। सिंहासन उसकी प्रभुता और उसके शासन का प्रतीक है, शायद इसलिए कि वह एक न्यायधीश भी है।

अध्याय 4 का अंत इस प्रकार होता है, सबसे पहले, आपको सिंहासन की यह तस्वीर भी मिलती है जो सभी चीजों के केंद्र में खड़ा है। व्यापक संकेंद्रित वृत्तों में, आपके पास चार जीवित प्राणी, 24 बुजुर्ग और देवदूत हैं। और मैं विस्तार से नहीं बताऊंगा कि वे 24 बुजुर्ग और चार जीवित प्राणी कौन हो सकते हैं।

मैं समझता हूँ कि वे देवदूत हैं जिनका कार्य सिंहासन पर बैठे परमेश्वर की आराधना करना है। और इसलिए, अध्याय 4 के अंत में आपको ये भजन मिलते हैं जो ये प्राणी गाते हैं। श्लोक 8 में कहा गया है कि दिन-रात, वे कभी भी यह कहना बंद नहीं करते कि चारों जीवित प्राणी पवित्र हैं, पवित्र हैं, पवित्र हैं सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर जो थे, हैं और आने वाले हैं।

अब, ध्यान दें कि हम पद 11 में क्या पाते हैं। फिर 24 बुजुर्ग गिरते हैं, और वे पद 11 में गाते हैं, आप हमारे प्रभु और परमेश्वर की महिमा और सम्मान और शक्ति प्राप्त करने के योग्य हैं क्योंकि आपने सभी चीजों को बनाया है और आपकी इच्छा से वे बनाई गई हैं और उनका अस्तित्व है। तो आपको ब्रह्मांड के पवित्र, संप्रभु प्रभु, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के रूप में परमेश्वर की यह तस्वीर मिलती है, जो अपनी सृष्टि से ऊपर खड़ा है।

फिर भी, अध्याय 5 से पता चलता है कि वह बहुत ही अंतरंग रूप से शामिल और चिंतित है क्योंकि वह हस्तक्षेप करने, इसे छुड़ाने और इसे बचाने के लिए नीचे पहुँचेगा। लेकिन यह हमें अध्याय 5 पर ले आता है। यूहन्ना अभी भी इस स्वर्गीय सिंहासन कक्ष के दृश्य में है, लेकिन अब वह एक और व्यक्ति का परिचय देता है, और वह है मेम्ना। यह मेम्ना जो यिश्ई की शाखा और पुराने नियम के वादों की पूर्ति के रूप में, दाऊद की जड़, यहूदा के गोत्र के सिंह के रूप में, अब पाप से प्रभावित अपनी सृष्टि को छुड़ाने के लिए पुस्तक में सन्निहित परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करेगा।

और वह ऐसा उस मेम्ने के रूप में करता है जो वध किए जाने के लिए प्रकट होता है, वह मेम्ना जो मारा गया था। अब दिलचस्प बात यह है कि जब आप अध्याय 5 के अंत में पहुँचते हैं, तो सबसे पहले आपको मेम्ने की यह तस्वीर मिलती है जो चलता है और परमेश्वर के दाहिने हाथ से पुस्तक लेता है। परमेश्वर का दाहिना हाथ अधिकार और शक्ति का प्रतीक है।

और आप पहले ही एक सवाल उठा चुके हैं: किस तरह का प्राणी, किस तरह का व्यक्ति सिंहासन तक चलकर जा सकता है और परमेश्वर के दाहिने हाथ से पुस्तक ले सकता है? इससे पता चलता है कि यह कोई साधारण प्राणी नहीं है। यह कोई साधारण प्राणी नहीं है... ध्यान दें कि यूहन्ना ने देखा है; यूहन्ना पूरे स्वर्ग में खोज करता है जहाँ ये सभी महान स्वर्गदूत हैं, और उनमें से एक भी

परमेश्वर के दाहिने हाथ तक चलकर पुस्तक लेने के योग्य नहीं है। वह कौन है जो परमेश्वर के सिंहासन के पास आकर उसके दाहिने हाथ से पुस्तक छीन सकता है? तो, यह पहले ही आपको सोचने पर मजबूर कर देता है कि यह किस तरह की आकृति है? खैर, अध्याय 1 हमें एक संकेत दे रहा है: यह मनुष्य का महान पुत्र है, जो दिनों का प्राचीन है, जो परमेश्वर की महिमा को प्रसारित करता है, जो परमेश्वर के न्याय को क्रियान्वित करता है, जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की और जीवन में आया है। परन्तु अब, अध्याय 5 बहुत ही रोचक ढंग से समाप्त होता है, क्योंकि परमेश्वर के मेमे को वही आराधना और स्तुति प्राप्त होती है जो परमेश्वर को अध्याय 5 में मिली थी। अतः, पद 9 पर ध्यान दें: तुम पुस्तक लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य हो, क्योंकि तुम वध किये गये थे।

पद 12, योग्य, वह मेम्ना है जिसे उसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए मारा गया था जो परमेश्वर ने अध्याय 4 में किया था, शक्ति और धन और बुद्धि और शक्ति और सम्मान और महिमा और प्रशंसा प्राप्त करने के लिए। और फिर सारी सृष्टि, सिंहासन पर बैठने वाले और मेमे के साथ जुड़ जाती है। दिलचस्प बात यह है कि अब ध्यान दें कि परमेश्वर और मेम्ना एक ही सिंहासन पर विराजमान हैं और एक ही आराधना प्राप्त करते हैं।

यह कैसे हो सकता है? पुस्तक के संदर्भ में जहाँ यूहन्ना अध्याय 16 और श्लोक 22 में झुकता है, वह एक स्वर्गदूत की पूजा करने के लिए झुकता है, और स्वर्गदूत उससे कहता है, ऐसा मत करो; केवल परमेश्वर की पूजा करो। उस संदर्भ में, आप मेमने को परमेश्वर द्वारा दी गई समान पूजा कैसे प्राप्त करवा सकते हैं और उसी सिंहासन पर कैसे बैठ सकते हैं यदि मेमना किसी तरह से स्वयं परमेश्वर नहीं है? तो अब हम उस विषय की लगभग पूर्ण अभिव्यक्ति देखते हैं जिसे हमने सुसमाचार में देखा था; हम प्रारंभिक चर्च और ईसाइयों को आराधना देते हुए देखना शुरू कर रहे हैं, वही आराधना जो परमेश्वर की थी, वही भक्ति, अब वह मेमने को भी दे रहे हैं। ताकि एकेश्वरवाद का उल्लंघन किए बिना, परमेश्वर के बारे में उनकी समझ अब यीशु मसीह को शामिल करने के लिए विस्तारित हो गई है।

तो यीशु मसीह स्वयं ईश्वर हैं। यीशु मसीह किसी न किसी तरह ईश्वर के अस्तित्व को साझा करते हैं। और मैं किसी न किसी तरह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि लेखक अभी तक चर्च के बाद के पंथों और स्वीकारोक्ति के संदर्भ में इसका वर्णन नहीं कर रहे हैं।

लेकिन निश्चित रूप से, यूहन्ना यीशु मसीह को स्वयं परमेश्वर के समान मानने और पहचानने में काफी सहज है और परमेश्वर के अस्तित्व में भागीदार है, जो उसी आराधना और उसी महिमा और उसी प्रशंसा के योग्य है जो परमेश्वर है। एकेश्वरवाद का उल्लंघन किए बिना, ऐसे संदर्भ में जहाँ केवल परमेश्वर की ही पूजा की जा सकती है, किसी अन्य प्राणी, स्वर्गदूत या मनुष्य की पूजा करना मूर्तिपूजा के समान है। फिर भी यीशु मसीह उसी आराधना के योग्य है जो परमेश्वर की है।

यीशु मसीह के बारे में एक और दिलचस्प संदर्भ यह है कि वह चर्चों के बीच में चलता है। अध्याय 1 में, यीशु को दीवटों के बीच में चलते हुए, चर्चों के बीच में चलते हुए दिखाया गया है। कभी-कभी अध्याय 2 और 3 पढ़ें।

वह वही है जो हमारे मन और हृदय की खोज करता है। फिर से, वह वही करता है जो केवल परमेश्वर ही कर सकता है। वह वही जानता है जो केवल परमेश्वर ही जान सकता है।

अध्याय 5 और श्लोक 6, यीशु मसीह का वर्णन, तब मैंने एक मेमे को देखा जो ऐसा दिख रहा था जैसे कि वह मारा गया हो, यशायाह के सेवक गीतों को भी प्रतिबिंबित कर सकता है, कि यीशु अब मारा गया मेमा है, यशायाह अध्याय 53 का सेवक - प्रकाशितवाक्य की दो अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएँ। उनमें से एक ने इस वाक्यांश को देखा, और हमने इसे देखना शुरू कर दिया।

वह अल्फा और ओमेगा, पहला और आखिरी, या शुरुआत और अंत है। संभवतः, ये तीनों एक ही बात कहने के तरीके हैं। कभी-कभी, ये तीनों एक साथ होते हैं।

कभी-कभी, आपको उनमें से सिर्फ एक ही मिलता है। कभी-कभी, आपको उनमें से दो मिलते हैं। उस वाक्यांश की पुराने नियम की पृष्ठभूमि, विशेष रूप से पहला और अंतिम, और फिर मुझे लगता है कि शुरुआत और अंत, और अल्फा और ओमेगा, ग्रीक वर्णमाला के पहले और अंतिम अक्षरों का जिक्र करते हुए, शुरुआत और अंत, और अल्फा और ओमेगा, बस पहले और अंतिम का विस्तार करने के तरीके हैं।

और पहला और अंतिम शब्द यशायाह अध्याय 44 से आता है, जहाँ परमेश्वर को पहला और अंतिम बताया गया है। मूर्तिपूजा के संदर्भ में उसे पहला और अंतिम बताया गया है, कि कोई भी अन्य व्यक्ति पूजा के योग्य नहीं है। किसी अन्य की पूजा करना मूर्तिपूजा है।

अपने उद्धार के लिए किसी और पर निर्भर रहना, किसी भी चीज़ पर निर्भर रहना मूर्तिपूजा है। सभी मूर्तियों को झूठे देवता के रूप में दिखाया गया है। लेकिन परमेश्वर, सच्चा परमेश्वर, पहला और अंतिम है।

तो, यह वर्णन, पहला और आखिरी, शुरुआत और अंत, और अल्फा और ओमेगा, पहले और आखिरी के दो विस्तार, यशायाह अध्याय 44 और पहले और आखिरी के रूप में परमेश्वर के वर्णन पर निर्भर करते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 और श्लोक 8 में, परमेश्वर बोल रहा है, मैं इसे परमेश्वर बोल रहा हूँ, कहता है, मैं अल्फा और ओमेगा हूँ, प्रभु परमेश्वर कहता है। यही है।

जो है और था, और जो आने वाला है, वह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर है। तो, परमेश्वर अल्फा और ओमेगा है। फिर से, अल्फा और ओमेगा पहले और आखिरी का विस्तार हैं।

इसलिए जब आप इन तीनों या संयोजनों में से किसी को भी सुनते हैं, पहला और आखिरी, शुरुआत और अंत, अल्फा और ओमेगा, तो वे मूल रूप से एक ही बात कह रहे हैं। ईश्वर सभी चीज़ों की शुरुआत और अंत में खड़ा है, और वह हर जगह और बीच में मौजूद है। ईश्वर सभी चीज़ों पर संप्रभु है।

अब, दिलचस्प बात यह है कि जब आप अध्याय 1, श्लोक 8 को ध्यान में रखते हुए पाठ पढ़ना शुरू करते हैं, जहाँ परमेश्वर अल्फा और ओमेगा होने का दावा करता है, तो अध्याय 1, श्लोक 17

पर पहुँचने पर क्या होता है? जॉन कहते हैं, जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा, मानो मैं मरा हुआ हूँ, और उसने अपना हाथ मेरे दाहिने हाथ पर रखा, और उसने कहा, डरो मत, क्योंकि मैं पहला और आखिरी हूँ। फिर से, जो यशायाह 41 से सीधे आता है, 44.6 श्लोक होगा, और 41.4 भी। यशायाह 41 और 44 में पहला और आखिरी परमेश्वर पर लागू होता है।

अब, यीशु मसीह प्रथम और अंतिम होने का दावा कर रहे हैं, खासकर तब जब, कुछ ही श्लोक पहले, इसके विस्तार का उपयोग करते हुए, ईश्वर ने अल्फा और ओमेगा होने का दावा किया है। और अब यीशु यह दावा करते हैं। लेकिन अगर हम पुस्तक के बिल्कुल अंत में, अध्याय 22 और श्लोक 13 पर जाएं, तो मैं वापस जाकर श्लोक 12 पढ़ूंगा, ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि आप समझ गए हैं कि यीशु बोल रहे हैं।

देखो, मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ। मेरा प्रतिफल मेरे पास है। मैं हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूँगा।

मैं, यीशु मसीह बोल रहा हूँ, मैं अल्फा और ओमेगा हूँ, पहला और आखिरी, शुरुआत और अंत। तीनों उपाधियाँ अब यीशु मसीह पर लागू होती हैं। फिर से, यह यशायाह 41 और 44 में पुराने नियम की पृष्ठभूमि से उपजा है, विशेष रूप से मूर्तियों के विरुद्ध परमेश्वर की अनन्य पूजा के संदर्भ में। इसलिए, यह एक उपाधि लेने में काफी सहज है, और यह दिलचस्प है, सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि एक उपाधि जो सभी चीज़ों पर परमेश्वर की संप्रभुता, उसके पूर्व-अस्तित्व को व्यक्त करती है।

वह सभी चीज़ों की शुरुआत और अंत में और बीच में हर जगह खड़ा है और अब इसे यीशु मसीह पर लागू करता है। फिर से, यह एक ऐसा शीर्षक था जो व्यर्थता के संदर्भ में था, वास्तव में, यशायाह में स्वयं परमेश्वर के अलावा किसी और को स्वीकार करने और उसकी पूजा करने की प्रत्यक्ष मूर्तिपूजा। अब हम पाते हैं कि यीशु मसीह ने खुद पर वह भूमिका और पहला और अंतिम, अल्फा और ओमेगा, शुरुआत और अंत की वह पदवी ले ली है।

और फिर, जो बात आश्चर्यजनक है वह यह है कि यह पुराने नियम से कोई पदनाम नहीं लेता और उसे मसीह पर लागू नहीं करता। वह पुराने नियम से कोई पदनाम लेता है जो परमेश्वर पर लागू होता है और उसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में परमेश्वर और मसीह पर लागू करता है। मेरे लिए, यह यीशु मसीह के बारे में जो सोचता है, उसके बारे में इससे अधिक स्पष्ट नहीं हो सकता कि यीशु स्वयं परमेश्वर है, वह जो परमेश्वर की उद्धार की योजना को क्रियान्वित करने, परमेश्वर के न्याय को क्रियान्वित करने, और अपने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्धार को लाने के लिए आता है।

दूसरी बात यह भी है कि हम दिलचस्प रूप से यीशु मसीह को आते हुए पाते हैं, जैसा कि हमने अन्य ग्रंथों में देखा है; हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ईश्वरीय गतिविधियाँ करने के लिए यीशु मसीह को आते हुए देखते हैं। अर्थात्, वे गतिविधियाँ और चीज़ें जो परमेश्वर से जुड़ी थीं या पुराने नियम में परमेश्वर का विशेषाधिकार और भूमिका थीं, और अब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यीशु मसीह को इसे पूरा करते हुए पाते हैं, जैसे कि पापों की क्षमा लाना, लोगों को छुड़ाना और

उनके पापों को क्षमा करना, अध्याय 1 और श्लोक 5 और 6। लेकिन बार-बार, यीशु को उस भूमिका को निभाते हुए देखा जाता है जिसका उपयोग पुराने नियम में परमेश्वर की गतिविधि को नामित करने के लिए किया जाता है। लेकिन एक बार फिर, हम प्रकाशितवाक्य को जो करते हुए पाते हैं, जिसे आप हमेशा अन्य नए नियम के लेखकों को करते हुए नहीं पाते हैं, वह यह है कि वह पुराने नियम में परमेश्वर के लिए भूमिकाएँ और पदनाम लेता है, पुराने नियम में परमेश्वर की गतिविधि, और इसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में परमेश्वर और मसीह दोनों पर लागू करता है।

तो फिर से अध्याय 1 और पद 4 पर वापस जाएँ। यह दिलचस्प है। अध्याय 1 और पद 4। आइए देखें। यूहन्ना के अभिवादन के एक हिस्से में, उसके पत्रात्मक अभिवादन में, वह कहता है, यूहन्ना, एशिया प्रांत की सात कलीसियाओं को, जो है और जो था और जो आनेवाला है, उसकी ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।

ध्यान दें कि फिर वह आगे कहता है, और सात आत्माओं से और यीशु मसीह से। तो अनुग्रह तीनों से आता है, जो लगभग एक अंतर्निहित त्रित्ववादी प्रकार का कथन है कि यूहन्ना तीनों को इतनी आसानी से अनुग्रह और शांति के रूप में जोड़ता है। लेकिन यहाँ कुछ और महत्वपूर्ण है।

ईश्वर को इस रूप में वर्णित किया गया है कि वह है और जो था, संभवतः निर्गमन से ईश्वर के वर्णन का विकास या उस पर आधारित है, मैं हूँ कथन जब ईश्वर मूसा से कहता है, उनसे कहो कि मैं तुम्हारे पास आया हूँ, मैं हूँ ने स्वयं को तुम्हारे सामने प्रकट किया है, और अब मैं ही हूँ जो अपने लोगों को बचाएगा। तो, जो है, जो था, और जो आने वाला है, संभवतः निर्गमन से ईश्वर के उस वर्णन का विस्तार है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि यह ईश्वर ही है जो आने वाला है।

इसलिए यह वाक्यांश न केवल परमेश्वर की अनंतता को दर्शाता है बल्कि इस तथ्य को भी दर्शाता है कि वह प्रकाशितवाक्य के संदर्भ में आने वाला है; प्रकाशितवाक्य सुझाव देता है कि यह परमेश्वर ही है जो न्याय करने के लिए आने वाला है। यह परमेश्वर ही है जो आने वाला है और अपने लोगों को उद्धार देने वाला है। यह परमेश्वर ही है जो इस धरती पर आकर हस्तक्षेप करने वाला है और न्याय और उद्धार दोनों लाने वाला है।

लेकिन देखिए, जब आप आगे पढ़ते हैं तो हम पाते हैं कि, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य के अध्याय 19 में, श्लोक 11 से शुरू करते हुए, और मैं पूरी बात नहीं पढ़ने जा रहा हूँ, लेकिन यहाँ यूहन्ना स्वर्ग का एक दर्शन देखता है जो खुला हुआ है, और वहाँ एक सवार और एक सफेद घोड़ा है, और फिर श्लोक 11 में कहा गया है, वह न्याय के साथ न्याय करता है और युद्ध करता है। उसकी आँखें धधकती आग की तरह हैं। उसके सिर पर कई मुकुट हैं। उस पर एक नाम लिखा है जिसे उसके अलावा कोई नहीं जानता।

वह खून में डूबा हुआ लबादा पहने हुए है, और उसका नाम परमेश्वर का वचन है। और जैसा कि बाकी पाठ आगे बढ़ता है, वह एक लड़ाई लड़ता है, एक अंतिम समय की लड़ाई, जो वास्तव में एक लड़ाई नहीं है, क्योंकि मसीह बस नीचे आता है और अपने मुंह से निकली तलवार से अपने दुश्मनों को मार डालता है। लेकिन मैं जिस बात पर जोर देना चाहता हूँ वह यह है कि इस पाठ में, हम मसीह को स्वयं न्यायाधीश के रूप में आते हुए पाते हैं।

अर्थात्, यीशु मसीह अध्याय 1, श्लोक 4 को पूरा करने के लिए आता है। परमेश्वर वही है जो है, जो था और जो आने वाला है। अर्थात्, वह न्यायाधीश के रूप में आ रहा है। अब, यीशु मसीह परमेश्वर के युगांतिक न्याय को निष्पादित करने के लिए न्यायाधीश के रूप में आता है।

इसलिए, यह दिलचस्प है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, हम देखते हैं कि परमेश्वर न्याय करने के लिए आता है और मसीह अपना न्याय करने के लिए आता है। एक बार फिर, यह दर्शाता है कि यूहन्ना उस चीज़ को लेने में काफी खुश था जो एक दिव्य विशेषाधिकार था, जो परमेश्वर का था। वास्तव में, अध्याय 19 में यीशु मसीह के इन विवरणों में से कुछ, उसने न्याय के साथ न्याय किया, वह न्याय करता है और युद्ध करता है, और उसका वस्त्र खून में डूबा हुआ है, पुराने नियम के पाठ से निकले हैं जो परमेश्वर को एक न्यायाधीश के रूप में संदर्भित करता है।

अब, वे मसीह पर लागू होते हैं। इसलिए अब यूहन्ना न्यायकर्ता के रूप में परमेश्वर के अधिकार को लेने में काफी सहज है, जो आने वाला है, और इसे न केवल परमेश्वर पर लागू करता है जो था और आ रहा है, बल्कि अब यह यीशु मसीह है जो न्याय करने के लिए आता है। शायद इसीलिए हमें अध्याय 22 में कई संदर्भों को पढ़ना चाहिए।

जब यीशु कहते हैं, देखो, मैं जल्द ही आ रहा हूँ, तो यह उनके दूसरे आगमन का संदर्भ है। और फिर, अंत में, अध्याय 22 की आयत 20 में, जो इन बातों की गवाही देता है, वह कहता है, हाँ, मैं जल्द ही आ रहा हूँ। आमीन, प्रभु यीशु के पास आओ।

इसलिए, न्याय और उद्धार दोनों लाने के लिए यीशु का आना अध्याय 1, पद 4 में परमेश्वर के विशेषाधिकार को पूरा करता है, जो था, है और जो आने वाला है। अब यह यीशु मसीह है जो उद्धार और न्याय लाने की परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए आता है। इसलिए मैं यीशु मसीह के बारे में अब तक जो कुछ भी देखा है, उसके बारे में दो सारांश कथन देना चाहता हूँ, जहाँ तक नए नियम के मसीह पर बाइबिल के धर्मशास्त्रीय जोर की बात है।

सबसे पहले, अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रकटीकरण और उनके साथ व्यवहार के चरमोत्कर्ष के रूप में, यीशु परमेश्वर की ओर से कार्य करता है। वह परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करता है। वह परमेश्वर को पूरी तरह से प्रकट करता है क्योंकि यीशु मसीह स्वयं परमेश्वर के सनातन अस्तित्व में भागीदार है।

यीशु उद्धार के लिए परमेश्वर के सभी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आता है, जो परमेश्वर ने पुराने नियम में करने का वादा किया था, अब यीशु मसीह नए नियम में करता है। और इन सब के कारण, वह भी उसी प्रशंसा, भक्ति और आराधना के योग्य है, जैसा कि परमेश्वर स्वयं है। दूसरा, पुराना नियम किसी ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा करता है जो परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करेगा।

हमने इसे कई बार सेवक भाषा में और यहाँ तक कि मनुष्य के पुत्र की भाषा में, साथ ही कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत भाषा में भी देखा है। पुराने नियम में किसी ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा की जाती है जो लोगों का प्रतिनिधित्व करेगा, जो वाचा के अधीन पूर्ण आज्ञाकारिता में रहेगा। यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरा होता है।

मानवता का प्रतिनिधि और मुखिया। तो, उम्मीद है कि ये दो कथन उन प्रमुख जोरों, धार्मिक जोरों को पकड़ लेंगे, जैसा कि नया नियम यीशु मसीह के व्यक्तित्व को दर्शाता है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा नए नियम के धर्मशास्त्र पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 21 है, यीशु, मसीहा, ईश्वर, भाग 2।